L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART. III
B.A PAPER - VII
PSYCHOLOGY (Honours)
PSYCHOPATHOLOGY

Dr. Pramod Kumar Sahu.
Assitant - Professor.
Suest - Teacher.
V.S.J. college Rajnagar
MADHUBANI (BIHAR)
pramodkumarsahu2018@gmail.com.

TOPIC - Antecedent Factors of Existential Psychology.

अस्तित्ववादी मनोविज्ञान की उत्पत्ति यद्यपि यूरोप के अस्तित्ववादी दार्शनिकों से हुई और फिर धीरे-धीरे यह अमेरिका के मनोवैज्ञानिकों के बीच लोकप्रिय हुआ। अस्तित्ववादी दार्शनिकों का सम्बन्ध मानवीय समस्याओं तथा उसके अस्तित्व के आंतरिक समस्याओं के समाधान से होता है। इस तरह के दार्शनिकों के अनुसार मानव अपने अस्तित्व की समस्याओं, संघर्ष एवं चिन्ताओं के प्रति जागरूक होता है। इस तरह के दार्शनिकों में मनुष्यों के मानवीय पक्षों एवं उसके वैयक्तिक आत्मनिष्ठ अनुभूतियों पर अधिक बल डाला जाता है। इस तरह से अस्तित्ववादी दार्शनिकों न तो तर्कवादी और न ही पदार्थवादी आन्दोलन है। इस दार्शनिकों की शुरुआत 19वीं शताब्दी के (Danish Philosophy) जिन का नाम सोरेन किर्केगार्ड था, के विचारधाराओं से हुई बाद में इसका विकास जर्मनी तथा फ्रांस के दार्शनिकों के विचारधाराओं से हुई, इनमें जर्मनी के मार्टिन हिडेगर तथा - कार्ल जैस्पर्स के नाम अधिक महत्वपूर्ण है। उसी तरह से फ्रांस के गैब्रियल मार्सेल तथा जीन-पॉल सार्त्र के नाम भी अधिक उल्लेखनीय है। इन सभी दार्शनिकों के विचारधाराओं से ही, सच पूछा जाय तो अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का प्रादुर्भाव (emergence) हुआ था। इन लोगों के विचारधारा को ही अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के प्रमुख पूर्ववर्ती कारक माना गया है। जिन का विवरण निम्नांकित है।

(1) सोरेन - किर्केगार्ड - किर्केगार्ड एक दार्शनिक थे, उनका विचार था कि व्यक्ति में ईश्वर के प्रति - अस्तित्व आवश्यक है। जो कोई ईश्वर के लिए

भी है। इसके साथ वह अपने अस्तित्व के विभिन्न तरह की कमजोरियों एवं दुर्बलता से भी अवगत रहता है। इन सबके बावजूद उसमें मृत्यु पाने की इच्छा होती है।

परिस्थितिस्वरूप, व्यक्ति की लघुकालीन अस्तित्व तथा पारलौकिक इच्छा के बीच एक तरह का संघर्ष (conflict) उठता है। जिससे व्यक्ति में अन्ततः विभिन्न तरह के चिन्ता तथा डर आदि की उत्पत्ति होती है।

(ii) ज्यां-पॉल सार्त्र (Jean-Paul Sartre) 1905-1980

सार्त्र एक फ्रेंच दार्शनिक है। इनके अस्तित्ववादी दार्शनिकों का मौलिक प्रश्न है। व्यक्ति के अस्तित्व का अर्थ क्या होता है। इस मौलिक प्रश्न का उत्तर देते हुए उन्होंने कहा कि व्यक्ति और संसार में उसके अस्तित्व का कोई वास्तविक अर्थ नहीं है। वे ईश्वर के अस्तित्व को नहीं मानते हैं और साथ-साथ यह भी नहीं मानते हैं कि व्यक्ति के अस्तित्व को ईश्वरवादी शक्तियों के रूप में ही व्याख्या किया जा सकता है। उनके लिए जीवन वास्तविकता की एक शृंखला (chain) होता है। क्योंकि जीवन की उत्पत्ति तथा उसकी निरंतरता को समझना मुश्किल है। अपने अस्तित्ववादी थ्योरी में उन्होंने साफ-साफ यह कहा कि व्यक्ति प्रकृतिः स्वतंत्र होता है तथा उसका अपनी मौलिक पसन्द (choice) होती है। यदि वह किसी तरह इस तरह की स्वतंत्रता एवं पसन्द से डर भागने की कोशिश करता है तो उसमें मानसिक संघर्ष चिन्ता एवं उदासी आदि उत्पन्न होता है।

(iii) मार्टिन हिडेगर (Martin Heidegger 1889-1976)

हिडेगर एक जर्मन दार्शनिक थे, इनका मत था कि सभी पशुओं में सिर्फ मनुष्य ही एक ऐसा सामाजिक पशु है जो अपने अस्तित्व के नितन्त से अवगत होता है। व्यक्ति अपनी मृत्यु से अवगत होता है। वह जानता है कि उसकी अपनी की कोई तरकी नहीं है। वह वातावरण से संबंधित तत्वों से किस तरह-

धमकियों आदि से भी अवगत रहता है। जिससे उसमें एक तरह का संघर्ष होता है। वह अपनी चिन्ताओं एवं डरों से निबटने के लिए कुछ पौराणिक विधियों का भी उपयोग करता है। इस तरह से किर्केगार्ड के समान हाइडेगर ने भी अनुभवों को संवेदी से युक्त माना है। उनका मत यह था कि व्यक्ति का अस्तित्व न तो उसके पसंद और न ही उसकी कोशिश से निर्धारित होता है। बल्कि इसका स्वरूप कुछ ऐसा होता है जो उसपर थोप दिया गया होता है, और वह मृत्यु तक बना होता है।

(iv) कार्ल जैसपर्स – जैसपर्स एक जर्मन दर्शनशास्त्री थे, इनके अनुसार व्यक्ति के अस्तित्व के तीन प्रमुख तरीके हैं। संसार की उन वास्तविकताओं से होता है जिसे व्यक्ति अपने प्रेक्षण (observation) द्वारा जान पाता है। बिइंग वन्सेल्फ से तात्पर्य व्यक्तिगत अस्तित्व के प्रत्यक्षण करके तथा अपने निर्णय एवं पसन्दों (choices) से अवगत होने की क्षमता से होता है। बिइंग इन इटसेल्फ से तात्पर्य अनुभवातीत संसार से होता है। इनका मत था कि व्यक्ति अपने वास्तविक दुनिया से अलग-अलग नहीं होता है। बल्कि वह अपनी स्वतंत्रता तथा निर्णयों से पूर्ण अवगत रहता है। व्यक्ति हमेशा दूसरों के अस्तित्व के साथ संसार बनाये रखता है जब व्यक्ति दूसरों के साथ संपर्क करने में समर्थ हो पाता है तो उसका अस्तित्व बना रहता है। संसार में सामाजिक सम्बन्ध बनी होती है। जिसमें वह समाज एवं लोगों के साथ अन्तःक्रियाएं करता है। उपर्युक्त दर्शनशास्त्रियों के विचारों से अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का धीरे-धीरे प्रादुर्भाव हुआ जिसका मूल तत्व यह है कि व्यक्ति अपने अस्तित्व से पूरी भाँति परिचित होता है तथा वह यह जानता है कि जब उसका अस्तित्व समाप्त हो जाएगा, तो क्या होगा। आधुनिक अस्तित्ववादी मनोविज्ञान के क्षेत्र में कुछ मनोवैज्ञानिकों द्वारा महत्वपूर्ण योगदान किये गये हैं। ऐसे मनोवैज्ञानिकों में निम्नांकित तीन का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

(i) लुडविग बिन्सवैन्गर (Ludwig Binswanger)

(ii) मेडार्ड बॉस- (Medard Boss)

(iii) रोलो मे - (Rollo May)

इन तीनों में सबसे विख्यात हैं।
बिन्सवैन्गर एक स्वीस मनोवैज्ञानिक थे, जिन्होंने अस्तित्ववादी मनोविज्ञान का समर्थन किया। इनका प्रभाव अमेरिकन मनोविज्ञान पर भी काफी था। इनका मौलिक प्रशिक्षण तो मेडिसीन (medicine) में हुआ था लेकिन वे अपने अस्तित्ववादी विचार को मनोविज्ञान के क्षेत्र में भी उपयोग किये। इनके महत्वपूर्ण पुस्तकों में बिईंग इन द वर्ल्ड - सलेक्टेड पेपर ऑफ लुडविग बिन्सवैन्गर महत्वपूर्ण है। इन्होंने एक्जिस्टेंस (Existence 1958) जिसे रोलो मे (Rollo May) ने संपादित किया था, में भी तीन महत्वपूर्ण अध्यायों को लिखा।
बिईंग इन द वर्ल्ड अर्थात डेसिन (Dasein) को मनोविज्ञान के लिए उनका सबसे महत्वपूर्ण योगदान माना गया है। यह संप्रत्यय (concept) है जिसके [illegible] उन्होंने यह विचार व्यक्त करते हुए [illegible] विचार है कि व्यक्ति के रूप में व्यक्ति का अस्तित्व संसार के बगैर नहीं होता है और संसार का अस्तित्व भी व्यक्ति के बगैर कुछ नहीं होता है। व्यक्ति तथा संसार एक दूसरे से अलग नहीं होते हैं। इसका मतलब यह हुआ कि इन दोनों में एकरूपता होती है। इन्होंने यह भी विचार व्यक्त किया है कि पारलौकिक देश व संसार के परे भी व्यक्ति के लिए कोई संभव है। इसका मतलब यह हुआ कि व्यक्ति अपने आप [illegible] पहचान कर [illegible] में सफल हो पाता है।

Dr. Pramodkumar Sahu,
Date- 11/09/2020,
Sub- Psychology,